# वार्तालाप नं.361, वार्तालाप, ता. 21.7.07 Discussion CD No.361, dated 21.07.07 at Bangalore MM

### समय 14.54

जिज्ञासू :—बाबा, सूक्ष्मवतन के पहले ओजोन लगता है। बाबा, हैलिकॉप्टर, एरोप्लेन वो कहाँ चलेंगे?

बाबा :- सूक्ष्मवतन तक ऐरोप्लेन पहुँचते ही नहीं। जहाँ आत्मा की पहुँच है वहाँ स्थूल चीज़ों की पहुँच नहीं है। पाँच तत्वों से परे हैं। एरोप्लेन तो पाँच तत्वों की चीज़ है।

# Time: 14.54

**Someone said:** Baba, there is (a layer of) ozone before the subtle world. Baba, where do helicopters, aeroplanes fly?

**Baba replied:** The aeroplanes do not reach there at all. The gross things cannot reach upto where the soul can reach. It is beyond the five elements. Aeroplane is a thing made up of the five elements.

### समय 15.39

जिज्ञासू:— बाबा, संगठन में याद करने में शक्ति मिलती है, तो उस संगठन में संकल्प करना है सहज। एक व्यक्ति एक संकल्प और एक व्यक्ति एक संकल्प करेंगे तो उतनी ही शक्ति मिलती है क्या?

बाबा :- तो संगठन कहाँ हुआ? जब सबके अलग-अलग संकल्प हैं ।

जिज्ञास् :- तो कौन से संकल्प करना है?

बाबा : कोई भी एक संकल्प करना है जो श्रेष्ठ संकल्प श्रीमत के अनुकूल है। उस संकल्प में स्थिर होकर के जब संगठित रूप में बैठेंगे तो एक ही वायब्रेशन बनेगा ।

### Time: 15.39

**Someone asked:** Baba, one receives power by remembering (the Father) in a gathering. It is easy to focus on a thought in that gathering. If one person creates one thought and another person creates another thought, then do they get the same power?

**Baba:** Then, is it a gathering when everyone is creating a different thought?

**Someone said:** So, which thoughts should one create?

**Baba said:** You should create any one thought, an elevated thought that is in accordance with the Shrimat. When you become constant in that thought and sit in a gathering, then, only one vibration will be created.

जिज्ञासू :- माना वो श्रेष्ठ संकल्प क्या है? जो कि वो ही .......

बाबा :— उस समय के अनुसार अलग—अलग है। जैसे अभी बोला है कि — विजय माला का आवाह्न करो। तो जिस समय बोला है और वो विजय माला का आवाह्न का कार्य पूरा नहीं हुआ है तो वो श्रेष्ठ संकल्प है।

जिज्ञासू:— माना हर समय कभी संगठन में बैठेंगे तो विजय माला आवाहन करने के लिये ही सभी संकल्प करना है।

**Someone asked:** What is that elevated thought? Is it the same.....

**Baba replied:** That varies according to the time. For example, it has been said now, invoke the rosary of victory (*vijaymala*). So, the time at which it has been said and that task of invoking the rosary of victory has not been completed, then that is an elevated thought.

**Someone said:** It means that whenever we sit in a gathering all of us have to have the thought about invoking the rosary of victory.

Email id: <u>a1spiritual1@gmail.com</u>
Website: www.pbks.info

बाबा :- ये नहीं बताया कि यही कार्य हो सकता है। अलग-अलग धर्मों की आत्मायें हैं उनका मन ही नहीं लगेगा उसमें। जो जन्मजन्मांतर पक्के सूर्यवंशी होंगे उनकी ही उसमें लागत लगेगी। औरों की दिल ही नहीं होगी।

जिज्ञासू :- तब तो फिर वो .....; थोड़े लोग एक प्रकार के संकल्प, थोड़े लोग अपना कुछ संकल्प, फिर संगठन में कैसे शक्ति ......

बाबा :— ये पाण्डवों का किला ऐसा बन जावेगा जिसमें एक भी विकारी प्रवेश नहीं करेगा। विकारी आत्मायें जब तक संगठन में घूसी हुई हैं तब तक एक संकल्प बन ही नहीं सकता ।

**Baba said:** It has not been said that only this task can be performed. There are the souls belonging to different religions. They will not be able to focus their mind on that at all. Only those who are firm Suryavanshis since many births will be interested in that task. Others will not like it at all

**Someone asked:** Then they.....if some people create one kind of thoughts; some people create their own thoughts, then how will the gathering become powerful.....

**Baba said:** This fort of Pandavas will become such that not even a single vicious person will enter. As long as vicious souls intrude the gathering, unity of thoughts is not at all possible.

बाबा :— फिल्टर होना ज़रूरी है। वो फिल्टर हो रहा है। श्रेष्ठ आत्माओं का संगठन तैयार हो रहा है। तब उनके संकल्प भी एक जैसे चलेंगे।

जिज्ञासू :- तो उसके लिये अभी प्रैक्टिस?

बाबा :- सबसे बडी प्रैक्टिस है आत्मिक स्थिति की। देहमान न आने पाये।

जिज्ञासू:— तो मैं आत्मा ज्योर्तिबिन्दु, मेरा बाप परमिपता परमात्मा ज्योर्तिबिन्दु। ये हैं तो हर धर्म के जो लोग है वो लोग भी कर पायेंगे ना। विजय माला का आवाह्न है तो सूर्यवंशी के अलावा कोई को खींच नहीं होता है ना।

बाबा :- हर धर्म की आत्मायें सिर्फ ज्योर्तिबिन्दु को मानती हैं।

**Someone said:** It means that the gatherings that are being organized now.....

**Baba said:** It is important to filter them. That process of filtering is going on. The gathering of the elevated souls is getting ready. Then they will also create similar thoughts.

**Someone asked:** What should we practice for that now?

**Baba replied:** The biggest practice is of the soul conscious stage. One should not become body conscious.

**Someone said:** So, I, a soul, am a point of light. My Father, i.e. the Supreme Father Supreme Soul is a point of light. If it were (just) this, then the people belonging to all the religions will also be able to do that, won't they? If it is to invoke the vijaymala, then none other than the suryavanshi will have an interest to do that, will they?

Baba said: Souls of every religion believe only the point of light.

जिज्ञासू :- माना साकार में निराकार की बात है?

बाबा : हर धर्म की आत्मायें साकार में निराकार को नहीं मानती । वो साकार को पहचान लें तो ज्ञान की गहराई को जान लें । मैं जो हूँ ,जैसा हूँ, जिस रूप में पार्ट बजा रहा हूँ इसी में तो सारा रोला है। अनिश्चय बुद्धि बन जाते हैं।

**Someone said:** Does it mean that it is a matter of the incorporeal one within the corporeal one? **Baba said:** Souls of all the religions do not believe in 'the incorporeal one within the corporeal one'. When they recognize the corporeal one, they will understand the depth of knowledge.

Everything depends on realizing me, what I am, how I am, and in which form I am playing my part. They lose faith.

जिज्ञासू :— .......संगठन तो हो रहे हैं। हर सन्डे को,......क्लास में बैठते हैं। फिर क्या करना है?

बाबा :- क्या करना है? आत्मिक स्थिति में सबसे पहले रहना है।

जिज्ञासू :- माना बाद में जो होगा वो लोग विजय माला का आवाहन करेंगे।

बाबा :- वो फाउन्डेशन के अनुसार वो स्वतः ही फिल्टर हो जावेगा।

**Someone asked:** ......gatherings are taking place. Every Sunday, .....we sit in the class. Then what should we do?

Baba said: What should you do? You should first of all remain in soul conscious stage.

**Someone said:** It means that those who will survive in the end will summon the rosary of victory.

**Baba said:** That process of filtering will take place automatically according to the foundation.

# समय 19.21

जिज्ञासू:— बाबा, पुरूषार्थ में और सेवा में धैर्य और हिम्मत बढ़ने के लिये क्या करना हैं? बाबा:— सेवा करते हैं, सेवा का रिज़ल्ट नहीं निकलता है। तो कोई जिनमें धैर्य नहीं होता है वो सेवा छोड़ देते हैं। जिनमें धैर्य है, निश्चय बुद्धि है वो धैर्य को नहीं छोड़ते। जानते हैं कि बाबा ने बोला है कि — ब्राह्मणों का जो भी कदम उठता है वो व्यर्थ नहीं जा सकता। आज नहीं तो कल जो भी बीज बोया है उसका रिज़ल्ट ज़रूर निकलेगा। जो लगन शील होता है आदि से अंत तक लगा रहता है उस लगन का मीठा फल निकलता है।

### Time: 19.21

**Someone asked:** Baba, what should we do to increase patience (*dhairya*) and courage (*himmat*) in doing effort and service?

**Baba said:** When someone does service, but the service does not bring any result, then some, who do not have patience, leave the service. Those who have patience, those who have the faith do not lose patience. They know that Baba has said, whatever step the Brahmins take cannot go waste. If not today, tomorrow the seed that has been sown will certainly bring result. The one who is devoted, remains committed from the beginning to the end; that devotion produces a sweet fruit.

### समय :- 20.34

जिज्ञासू :— बाबा, क्लास में जब स्टार्ट होता है याद की, जब स्टार्टिंग में दस मिनिट म्यूज़िक है, एण्डिंग में दस मिनिट म्यूज़िक है, बीच में बीस मिनिट ऐसा रहेगा, तो उससे एकाग्रता की शिक्त बढ़ेगी? माना म्यूज़िक में ही बुद्धि चले जायेगी । नहीं तो आवाज़ कम है, ज्यादा है कौंन सी कैसेट डालना है?

# Time: 20.34

**Someone asked:** Baba, when remembrance starts in the class, there is ten minutes music in the starting, and ten minutes music in the ending and it remains like this (silent) for twenty minutes in between, then will the power of concentration (*ekaagrata*) increase through this? It means that the intellect will get attracted only to the music. Otherwise, [(the intellect will be busy in thinking) the sound is low, it is loud, which cassette should be played?

बाबा :— ये तो 63 जन्मों का अभ्यास है। जिनका 63 जन्मों का अभ्यास है उस अभ्यास को एकदम तुड़वाया नहीं जा सकता है। हथेली पे आम नहीं उगाया जा सकता है; इसलिये पहले रिकार्ड बजाने की प्रथा चली। गीत बजाते थे। बाबा की याद में बैठने के लिये, कोई आधार लेते थे; लेकिन असली बात तो ये हैं कि ओरिजिनल याद तो वो हैं जिसमें बाहर के किसी भी आधार की ज़रूरत ना हो। संगीत भी न चले । अथवा रेलवे स्टेशन जैसे भगद्दड़ जैसा वातावरण हो। उस वातावरण में होते हुये भी बुद्धि का योग लगा रहे। चाहे गीत ज़ोर—ज़ोर से बजे, चाहे धीरे—धीरे बजे, चाहे ट्यून बजे, चाहे संगीत बजे। बजे—बजे, ना बजे। जिनका लगाव प्रैक्टिकल जीवन में एक के साथ लगा होगा, तन स्वाह हुआ होगा एक के प्रति, धन स्वाहा हुआ होगा एक के प्रति, समय, सम्पंकी और संबंधी एक के प्रति स्वाहा हुये होंगे उसकी ऑटोमेटिक लागत उस तरफ लग जावेगी।

**Baba replied:** This is the practice of 63 births. Those who have practiced this for 63 births, that practice cannot be made to break suddenly. A mango tree cannot be grown on the palm (nothing can be accomplished all of a sudden). That is why initially the tradition of playing a record was followed. They used to play the songs. In order to sit in Baba's remembrance, they used to take some support. But the truth is that the original remembrance is that which needs no external support. There is no need to play music as well. Or else (suppose) there is an atmosphere of chaos, like in a railway station. In spite of being in such an atmosphere, the intellect should remain connected (with the Father). Whether the song is played loudly, whether it is played softly, whether a tune is played or whether music is played, whether it is played or not. Those who are devoted to the one practically in their life, whose body is sacrificed on the one, whose wealth is sacrificed on the one, whose time, contacts and relatives are sacrificed on the one will automatically be devoted towards him.

जिज्ञासू:— कल से आवाज़ और भी बड़ा देंगे। बाबा :— कौन सा आवाज़? जिज्ञासू :—म्यूज़िक का आवाज़। बाबा :— जिनकी लगन लग चुकी होगी उनको कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा। जिज्ञासू :— कान सहन कर नहीं पा रहे हैं बाबा।

**Someone said:** From tomorrow onwards they will increase the sound.

**Baba said:** Which sound?

Someone said: The sound of music.

**Baba said:** Those who are devoted will not be affected by it

**Someone said:** The ears can't tolerate it Baba?

बाबा :— जो कान सहन नहीं करने पा रहे हैं उनका लागत ज़्यादा है देहभान की बातों में। आगे चल के भारी भारी आवाज में एटम बॉम्ब फटेंगे। अभी तो जब दीपावली होती है तो छोटी—छोटी बंबियाँ फटती हैं। फटा—फट—3। लोग परेशान हो जाते हैं। जब वो बड़े—बड़े फटेंगे और चारों तरफ आवाज़ होगा उस समय एकाग्र होने वाले एकाग्र होंगे। जिन्होंने प्रैक्टिस की होगी वो एकाग्र होंगे। जिन्होंने प्रैक्टिस नहीं की है वो एकाग्र कैसे हो पायेंगे?

**Baba said:** The (ones) ears cannot tolerate (loud music) means that they are devoted more towards the aspects of body consciousness. In future, the atom bombs will explode with a loud noise. Now, when Dipawali is celebrated, only small bombs explode in quick succession. People are disturbed. When those big ones will explode, and there will be noise everywhere, at that time those who can concentrate will concentrate. Those who might have practiced will concentrate. How can those who have not practiced concentrate?

Email id: <u>a1spiritual1@gmail.com</u>
Website: <u>www.pbks.info</u>

जिज्ञासू:— माना अभी शांत वातावरण को ऐसा बनाके प्रैक्टिस करनी है। बाबा:— वो तो ऑटोमेटिक हरेक का अपने आप स्वतः ही मिलता रहता है। कोई होते हैं शांत वातावरण में रह कर के भी धम चक्कर मचाते रहते हैं। खुद भी दुःखी होते रहते हैं दूसरो को भी दुःखी करते रहते हैं। समझ लेना चाहिए कि जब आने वाला ऐसा वातावरण होगा तो उसमें वो कितने टिकेंगे? फा हो जायेंगे।

**Someone said:** It means that now we have to practice by changing the peaceful atmosphere to one like that .

**Baba said:** Everyone keeps experiencing that automatically. Some create a disturbance even while living in a peaceful atmosphere. They themselves keep on becoming sorrowful and keep making even the others sorrowful. One should understand that when the coming atmosphere will be such, then to what extent will they survive in that? They will run away.

# समय :- 26.33

जिज्ञासू:— 'रूहानी बाप के रूहानी बच्चें' कहते हैं ना। अभी जो भी बच्चें बनते हैं साकार द्वारा, वर्सा पाते हैं साकार द्वारा। फिर रूहानी बाप से ताल्लुक कैसा लगता (रखता) है? बाबा तो बोलते हैं आत्मा तो नहीं बना सकते। आत्माओं को तो रचा नहीं जाता । बाबा :— आत्मा रची नहीं जाती है; लेकिन आत्मा देहभान में और आत्मिमान में टिक तो सकती है? आत्मा चाहे तो देहाभिमानी बन जाये, जिस्मानी बन जाये और आत्मा पुरूषार्थ करे तो रूहानी बन जाये।

### Time: 26.33

**Someone asked:** It is said, the spiritual children of the spiritual Father, isn't it? Now whoever becomes a child, they become through the corporeal, they obtain the inheritance through the corporeal. Then how are they connected with the incorporeal father? Baba says that souls cannot be created. Souls are not created.

**Baba said:** A soul is not created, but a soul can remain in body consciousness and soul consciousness, can't it? A soul, if it wishes, may become body conscious, and if a soul makes effort it can become spiritual.

जिज्ञासू:— वो ठीक है बाबा, बात तो वो नहीं है। रूहानी बाप से, माना डायरैक्ट शिव पिता से, आत्मा का कनेक्शन क्या होता है? ज्ञान लेता भी साकार द्वारा और वर्सा भी साकार द्वारा मिलता है। तो किस हिसाब से पिता कह सकते हैं निराकार को?

बाबा :— ये तो पहचान की बात है ना। कोई तो बुद्धि में झट बुद्धि में बैठ जाता है कि हम देह नहीं हैं। हम ज्योति बिन्दु आत्मा हैं। और कोई सालों से ज्ञान में चल रहे हैं। और उनकी अभी भी समस्या है कहते हैं हम बिन्दी कैसे बने। बिन्दी को कैसे याद करें। ये सब क्या है? बनी बनाई सब बन रही अब कछु बननी नाय।

**Someone said:** That is all right Baba; that is not the matter. What is the connection of the soul with the spiritual Father, i.e. with Father Shiv directly? One receives the knowledge as well as the inheritance from the corporeal. So, how can the incorporeal one be called the Father?

**Baba replied:** It is about recognizing (the Father), isn't it? It fits immediately in someone's intellect that I am not a body. I am a point of light soul. And some are following the knowledge since many years. And for them it is still a problem. They say, how can we become a point? How should we remember the point? What is all this? Whatever is predetermined is being enacted; nothing new is to be enacted now.

Email id: <u>a1spiritual1@gmail.com</u> Website: <u>www.pbks.info</u> जिज्ञासु: - माना ये एकाग्रता से ही करना है?

बाबा :— कोई की ज्ञान सुनत—सुनते ही बीज रूप स्टेज बनने लगती है। फांउन्डेशन पक्का होने लगता है। और कोई का उसमें संशय पैदा हो जाता है सुनते—सुनते। जो बाबा कहते हैं जो हमारे कुल का होगा थोड़ा भी सुनेगा, तो झट बुद्धि से कैच कर लेगा। हमारे कुल का नहीं होगा तो रोज उसको तिक—तिक करते रहो वो अपोजिशन करता रहेगा।

**Someone said:** Does it mean that we have to do this with concentration?

**Baba replied:** Some souls start achieving the seed-form stage even while listening to the knowledge. Their foundation starts becoming strong. And some others develop doubts in it while listening, for which Baba says that the one who belongs to our clan will catch immediately through the intellect even if he listens to a little. If he does not belong to our clan, then he would keep opposing even if you keep narrating (knowledge) to him everyday.

जिज्ञासू:— तो ज्ञान से तीखा जा सकेंगे या याद से तीखा जा सकेंगे? बाबा:— ज्ञान माना जानकारी। जानकारी जब तक न हो, पहचान जब तक न हो। तो याद कैसे आयेगी? जानकारी भी असलियत की। सत्य क्या है। इसलिये शास्त्रों में कहा है — सत्यस्य तत्वम नेहतं गुहायाम्। सत्य का तत्व गुफा में छुपा हुआ है। महा जनेनीयेन गता सफन्था। महा पुरूष जिस रास्ते से जाते हैं उस गुफा में सत्य के तत्व को ढूँढ़ने के लिये, वो ही रास्ता। भित्तमार्ग में रास्ता बना दिया। वहां अमरनाथ की गुफा बना दी । उसमें शिव लिंग हो गया और वहाँ की यात्रा कर रहे हैं। ये सत्यस्य से तत्वम हो गया गुफा में छुपा हुआ। जो—जो जितनी—जितनी यात्राएं करते हैं वो महान पुरूष हो गये।....

**Someone asked:** So, will one be able to become swift (in effort) through knowledge or through remembrance?

**Baba replied:** Knowledge means information. Unless one has the information, unless one has the recognition, how can one remember? The information should also be of the truth (*asliyat*). What is the truth (*satya*)? That is why it has been written in the scriptures – *satyasya tatvam nehatam guhaayaam*. The essence of truth is hidden in a cave. *Maha janeneey gataa safantha*. It is the same path that is followed by the great men to search for the essence of the truth in that cave. A road has been made in the path of worship. The cave of Amarnath has been built there. A Shivling has been placed in it and people go there on a pilgrimage. This is an essence of truth hidden in a cave! Whoever performs more pilgrimages is a great personality.

.....जैसे मुस्लमानों में समझते हैं जो हज की यात्रा कर आते हैं, वो हाजि सबसे ऊँचे हैं उनको बहुत मान देते हैं। अब ये तो कोई बात ही नहीं हुई। वास्तव में परमात्मा बाप आकर के जो गुह्यता की ज्ञान की बात बताते हैं। उस गुह्यता के आधार पर जो नम्बर वार जो सच्ची—सच्ची आत्माएं, उनमें से जो सौ परसेंट सच्ची आत्मा है, उस आत्मा को परमात्मा बाप अपना मुकर्रर रथ बनाय लेता है। उसको पहचानना ये सत्य के तत्व को स्वीकार करना और जानना है। और वो भी स्थायी रूप में।

......Just as the Muslims think that those who perform haj pilgrimage, those Haajis are the greatest; they are given a lot of respect. Well this is not meaningful at all. Actually, the secrets of the knowledge that the Supreme Soul Father comes and narrates, on the basis of that secrecy (guhyataa), the Supreme Soul Father makes the hundred percent true soul among the numberwise true souls, as His appointed chariot. To recognise him is to accept and know the essence of the truth and that too in a lasting/permanent form.

जिज्ञासू:— माना तब तक आत्माएं वो स्टेज को नहीं बना पायेंगे जब तक नहीं पहचानेगी। बाबा:— जितना पहचानती हैं उतनी स्टेज भी बनती है। दूसरों के कहने के आधार पर। जिसकों कहते हैं माया या मायावी पुरूष। उन मायावियों के चक्कर में आने से बुद्धि विक्रित हो जाती है। तो भी अनुभव करती है कि हम नीचे गिर रहे हैं; इसलिए बोला है संग उसका करना चाहिए, जिसका संग करने से अवस्था ऊँची उड़ती हो। जिसका संग करने से अवस्था नीचे आ जाये, मन दु:खी हो जाये, उनका संग नहीं करना चाहिए वो झुठा संग है।

**Someone asked:** Does it mean that until the souls don't recognize (him), they will not achieve that stage.

**Baba said:** It achieves the stage to the extent it recognizes. On the basis of others' words, which is called *maya* or *mayavi* (illusive) men. The intellect becomes vicious (*vikrut*) as it is entangled by those *mayavi* persons. Even then it feels that it is experiencing downfall; that is why it has been said that one should keep the company of those, whose company causes the stage to rise/fly. One should not keep the company of those, whose company causes the downfall of the stage, causes the mind to become sorrowful. [That is the false company].

# समय :- 32.21

जिज्ञासू :— बाबा एक माता एडवांस कोर्स सुनने के बाद भी एडवांस इधर भी आती, उधर भी जाती, बेसिक में भी जाती। तो उसकी शुटिंग क्या होगी है?

बाबा :-पूरा निश्चय बुद्धि नहीं बनी है। इंधर की बातें उधर जाकर बताती है; इसलिए बताती कि ये बहने जाकर के वहाँ लड़ाई लड़ें। और फैसला करें कि राइट क्या है रांग क्या है। उसकी अपनी बुद्धि में इतनी निर्णय शक्ति नहीं कि फैसला कर पाये कि हम एक पाला में रहेंगे।

# Time: 32.21

**Someone asked:** Baba, a mother, even after listening to the advance course, comes here to the advance (party) as well as goes there in the basic. So, what kind of a shooting will she perform?

**Baba replied:** She has not developed complete faith. She goes there and passes on to them the news from this place. She tells them so that the sisters should go there and fight and decide what is right and what is wrong. Her intellect does not have the decision-making power so that she could decide to stay on one side.

# समय :-33

जिज्ञासू:— ..... तीन लोको का चित्र बनाये ना। बाबा ने जो पहले बनाया था उसमें तो ऊपर शंकर को बिठाया। शंकर को सूक्ष्म वतन में ऊपर बैठाया, ऊँचे तब्बके में। अभी तो जो इन्होंने बनाया। नया चित्र बनाया है। उसमें शंकर को नीचे करके ब्रह्मा को ऊपर बिठाया। ......... आजकल बाबा बहुत क्लारिफिकेशन दे रहे हैं उसके बारे में। तो वो सुनके ऐसा बनाया होगा क्या?

# **Time: 33**

**Someone asked:** ......the picture of the three abodes has been prepared, hasn't it? The picture that Baba had prepared earlier, in that Shankar was seated above. Shankar was seated in the subtle world in the upper portion, at a higher level. Now the picture that these people have prepared; they have prepared a new one. In that Shankar has been shifted below and Brahma has been seated above......now a days Baba is giving a lot of clarification in this regard. So, did they prepare it like this after listening to it?

Email id: <a href="mailto:a1spiritual1@gmail.com">a1spiritual1@gmail.com</a>
Website: <a href="mailto:www.pbks.info">www.pbks.info</a>

बाबा :— माना ये हैं कि ब्रह्मा ही शंकर बनता है। ब्रह्मा ही दाड़ी मूँछ वाला विकारी बनता है। ब्रह्मा ही ऊँची स्टेज में जाकर के शंकर बनता है। आत्मा तीनों ही पार्ट बजाती है। ब्रह्मा का भी पार्ट बजाती है, पालना का भी पार्ट विष्णु का बजाती है और विनाशकारी पार्ट शंकर का भी बजाती है। हर आत्मा के ये तीन पार्ट। इसलिए ब्रह्मा की सोल भी तीसरे स्टेज में तीसरे तब्बके में पहुँच गई।

**Baba said:** It means that Brahma himself becomes Shankar. Brahma himself becomes a vicious one, who has beard and moustaches. Brahma himself achieves a high stage and becomes Shankar. A soul plays all the three parts. It plays the part of Brahma; it plays the part of sustenance in the form of Vishnu as well and it plays the destructive part in the form of Shankar too. Every soul plays these three parts. That is why Brahma's soul also reached the third section in the third stage.

जिज्ञासू :— हमने ऐसा सोचा बाबा बहुत क्लारिफिकेशन ....दे रहे हैं ना । तो वो उनके पास वो कैसेट्स पहुंचा होगा वो सुनके। बाबा बोलते है ना—दुःखधाम के जो अधिष्ठाता है वो ब्रह्मा हैं। शान्तिधाम के अधिष्ठाता है वो शंकर; इसलिये वो परमधाम से बाप से बहुत नजदीक है कहके। तो सुनके उन्होंने ऐसा बनाया होगा क्या?

**Someone asked:** I thought that Baba is giving a lot of clarifications...., isn't he? So, those cassettes might have reached them and after listening to that..... Baba says, doesn't he? Brahma is the presiding deity of the world of sorrows. Shankar is the presiding deity of the abode of peace. That is why he is very close to the Father and the Supreme Abode. So, they might have heard this and made (the picture) like this.

बाबा :— नहीं, ओरिजनल होगा वो चित्रों में भी चैन्ज नहीं होने देगा। लिट्रेचर में भी चैंज नहीं होने देगा। आदि सनातन धर्म की जो भी परम्पराएं हैं विधर्मियों ने आकर के बिगाड़ दीं। उनके संग के रंग में आकर के हम अपनी परम्पराओं को भूल गये। तो बेसिक में जो दूसरे—दूसरे धर्म की आत्माएं घुसी हुई है वो चैन्ज करती चली जा रहीं हैं, मूल ज्ञान को। चेंज करते—करते इतना चैंज कर देंगी कि बिल्कुल उल्टा कर देगीं। अभी बेसिक में जाके देखना सारी परम्पराएं भिक्तमार्ग की ही चलेंगी। एडवांस में धीरे—धीरे भिक्तमार्ग उड़ता जा रहा है। भिक्तमार्ग की परम्परायें बुद्धि में से उड़ती जा रहीं हैं। हाँ दूसरे धर्म के जो बीज होंगे, निचले धर्म के बीज होंगे उनकी अलग बात है; लेकिन जो ओरिजनल हैं सूर्यवंशी, उनमें तो भिक्तमार्ग का अंष मात्र भी खलास होता चला जायेगा।

**Baba said:** No, the one who is original will not allow even the pictures to change. He will not allow any change even in the literature. The *vidharmis* (souls belonging to the religions other than the deity religion) came and spoiled the traditions of the *Aadi Sanaatan Dharma*. By getting coloured by their company we forgot our traditions. So, the souls belonging to the other religions, which have infiltrated the basic are going on changing the original knowledge. Through this process of incorporating changes, they will change the knowledge to the extent that they will make it (just) the opposite. Now go and see (those) in the basic (knowledge), all the traditions of the bhaktimarg will be followed. In the advance (party), gradually *bhaktimarg* is vanishing. The traditions of *bhaktimarg* are vanishing from the intellect. Yes, the seeds of other religions, he seeds of the lower religions is different case. But, in those who are originally *Suryavanshis* even the trace of *bhaktimarg* will go on vanishing.

Email id: <a href="mailto:a1spiritual1@gmail.com">a1spiritual1@gmail.com</a>
Website: <a href="mailto:www.pbks.info">www.pbks.info</a>

समय :- 36.22

जिज्ञासू:— बाबा आज मुरली में बताया ना। सत्य को एडवर्टाइज़मेंट करना है। बाबा:— झूठ की दुनियाँ हो गई है। सारे ही मार्केट में झूठे हीरे बिक रहे हैं। और एक सच्चे हीरों का व्यापारी एक छोटी सी दुकान में सच्चे हीरे बेच रहा है। तो सब क्या समझेंगे? िक ये मी झूठे हीरे बेच रहा होगा। इमिटेशन बेच रहा होगा। थोड़ा उसको पहचान देनी पड़े लोगों को िक सच्चे की ये पहचान है और झूठे की ये पहचान है। वो एडवर्टाइज़मेंट करना पड़े। संसार में सतयुग की स्थापना करनी है तो सत्य बातों को दुनियाँ के सामने लाना पड़े। नहीं तो सत्य स्थापन नहीं हो सकता और झूठा गायब नहीं हो सकता। हर आत्मा को अपनी सतोप्रधान स्टेज ज्यादा प्रिय है। कोई भी आत्मा ऐसी नहीं है जो तमोप्रधान स्टेज को पसन्द करती हो। सत्य सब को अच्छा लगता है; लेकिन सत्य को प्रख़्यात करने के लिये सत्य की पहचान देनी ही पड़ती है।

Time: 36.22

**Someone asked:** Baba it has been mentioned in the Murli today that truth should be advertised. **Baba replied:** It has become a world of falsehood. Only false diamonds are being sold in the market. And (if) a businessman who trades real diamonds is selling real diamonds in a small shop. So, what will everyone think? (They will think) that he may also be selling fake diamonds. He must be selling the imitation. He will have to make the people realize that this is the indication of the original (diamond) and this is the indication of the fake (diamond). That advertisement will have to be done. If Golden Age is to be established in the world, then the truth will have to be brought before the world. Otherwise, truth cannot get established and falsehood cannot vanish. Its own pure stage is dear to every soul. There is no soul that likes the *tamopradhan* (impure) stage. Everyone likes the truth, but in order to make the truth famous one certainly needs to give the introduction of the truth.

### समय :- 1.02.11

जिज्ञासू:— बाबा आप दिव्य दृष्टि की चाबी बच्चें (बच्चों) को नहीं देते हैं ना। क्यों बाबा? बाबा:—क्योंकि मिस यूज करेंगे; इसिलये बुद्धियोग की चाबी देते हैं। बुद्धि का ताला खोलो, वो चाबी दे दी। चाहे जितनों की बुद्धि का ताला खोलते जाओ। बुद्धि का ताला खोलने की चाबी, इसमें मेहनत लगती है। दिव्य दृष्टि की चाबी ऐसी है जिसमें मेहनत नहीं है। वो ऐसे ही साक्षात्कार हो जाता है।

# Time: 1.02.11

**Someone asked:** Baba you don't give the key of divine vision (*divya drishti*) to the children, do you? Why is it so Baba?

**Baba replied:** It is because they will misuse it. That is why He gives the key of *buddhiyog* (connection of the intellect with the Supreme Soul). Open the lock of the intellect. That key has been given. You can go on opening the lock of the intellect of as many persons as you like. There is hard work involved in the key to opening the lock of the intellect. The key to divine vision is such that it does not involve any hard work. The divine vision is simply experienced.